बालकृष्ण भट्ट और रामविलास शर्मा की उपनिवेशविरोधी दृष्टि

शिवाजी*

बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के एक सशक्त निबन्धकार हैं। उनके निबन्धों में समाज के विभिन्न स्वरूप मौजूद है। उनके आलोचनात्मक निबन्ध तो अपने समय के और एक हद तक आज के समय में भी मिशाल कायम किये हुए हैं। ब्रिटिश उपनिवेशित भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध अपनी लेखनी के माध्यम से भट्ट जी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। वहीं रामविलास शर्मा जी उपनिवेशित भारत और उसके बाद स्वतंत्र भारत में अपनी पैनी आलोचनात्मक दृष्टि से उपनिवेश विरोधी गतिविधियों पर लेखनी चलायी है। इस प्रकार बालकृष्ण भट्ट यदि उपनिवेश विरोधी लेखन की नींव तैयार करते हैं तो रामविलास शर्मा जी उसकी भव्य इमारत।

उपनिवेशित भारत में जनता की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी। भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास रोक अंग्रेजों ब्रिटेन की अर्थ व्यवस्था का विकास कर रहे थे। भारतीय उद्योगों को चौपट कर दिया गया। अंग्रेजों ने ऐसी नीति बनायी कि जिससे भारतीय व्यापार को घाटा हो और ब्रिटेन को मुनाफा। यहां की सम्पत्ति को लूटकर अंग्रेज अपने देश को आबाद कर रहे थे। भारतीय जनता कभी अकाल तो कभी महामारी, प्लेग, चेचक, हैजा इत्यादि से जूझती रहती थी। जिनके लिए किसी भी प्रकार की सहायता शासन द्वारा उपलब्ध नहीं कराया जाना था। किसानों की फसलें नष्ट हो जाने अथवा अकाल के कारण फसल पैदा न होने पर लगान को वसूल करना, किसानों को पीटना, प्रताड़ित करना, उनके जानवरों को खोल ले जाना तथा उनकी जमीन को नीलाम कर देना इत्यादि। जिसके कारण भारतीय जनता को अत्यन्त कष्ट भोगना पड़ता था। भारतीय धन सम्पदा को विदेश (ब्रिटेन) भेज दिया जाता है। भारतेन्दु ने लिखा है ''पै धन विदेश चलि जात, इहै अति ख्वारि''। यह दुःख की ही बात है कि देश कंगाल होता चला जा रहा है। इसी बात को लेकर भट्ट जी भी चिन्तित हैं ''और अब इस अंग्रेजी राज्य में जो घृणा की पीड़ा है और असंतोष फैलता जाता है सो इसलिए कि शासन के साथ ही साथ वणिक वृत्ति पर आरूढ़ हो हर एक बहाने हमारा रूपया ये खींच रहे हैं। सब लोग निःसत्व और निर्धन हो गये हैं जहां का एक अरब के लगभग धन प्रतिवर्ष बाहर चला जायेगा वहां कै दिन देश में सम्पत्ति ठहर सकती है''।[1] शर्मा जी भी धन विदेश जाने को किस प्रकार देखते हैं इसको उनकी रचना ''सन सत्तावन की राज्य क्रान्ति और मार्क्सवाद में देखा जा सकता है - ''लेकिन इस मंजिल में ब्रिटिश पूंजीवाद को भारत मिला किससे? वह मिला इसके पहले वाली मंजिल से, औद्योगिक पूंजीवाद से और वह उसे मिला था व्यापारिक पूंजीवाद से।''[2] इस प्रकार व्यापारिक

*शोध छात्र हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

पूंजीवाद के माध्यम से अंग्रेज भारत का शोषण करते रहे और अपनी नीति से भारत की सम्प्रभुता का दमन कर दिया।

आज जो पूंजीवादी युग का वैश्विक दौर चल रहा है इसकी चिन्ता बालकृष्ण भट्ट जी बहुत पहले करते हुए दिखायी देते हैं। आज के समय में संचार माध्यमों का फैला जाल, इसके बढ़ावा में महतवपूर्ण योगदान दे रहा है। गुलामी के समय अंग्रेज भारतीय व्यापार, भारतीय उद्योग तथा भारतीय मजदूरों का शोषण किस प्रकार करते हैं, यहां के कपड़े मिलों को विनष्ट करने के लिए क्या कदम उठाते हैं, इन सबकी चिन्ता भट्ट जी को है जो कहीं न कहीं आज के विदेशी खुले बाजार ;व्वमद डंतामजद्ध में भारतीय उत्पाद किस प्रकार पिछाड़े जा रहे हैं, जिसमें विकसित अर्थव्यवस्था विकासशील अर्थव्यवस्थाओं व अल्प विकसित अर्थव्यवस्थाओं को खुले वैश्विक बाजार के होड़ में बाहर हाशिए पर ढकेल रही है। अब भारतीय उत्पादन महंगा तथा विदेशी उत्पादन सस्ता होने से लोगों का रूझान विदेशी की तरफ ज्यादा है। विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं में विकसित देश अनेक रूपों में अपने अधिकार को कायम रखना चाहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में देखिए विदेशी विश्वविद्यालय की स्थापना करना तथा उच्च फीस का निर्धारण करना और सरकार पर दबाव बनाना कि शिक्षा का निजीकरण हो जाये जिससे विकसित अर्थव्यवस्था विकासशील अर्थव्यवस्था को दबाये रख सके। मोबाइल इत्यादि संचार के माध्यमों से निजी कम्पनियां अपनी पूंजी लगाकर अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहती हैं। यहां की सरकार भी इस वैश्वीकरण के दौर में विदेशी पूंजी को बढ़ावा दे रही है। भट्ट जी अंग्रेजों की इसी प्रकार की नीति का उल्लेख करते हैं - ''जब राजाओं को यहां तक निज लाभ पर दृष्टि है तब प्रजा निश्कंचन न होने से कहां तक बच सकती है, स्वदेशी की तरक्की देख सरकार को यहां के मजदूरों और कुलियों पर दया आयी है, फैक्ट्री कमीशन निकाला गया है, जहां-जहां कपड़े आदि की मिले हैं वहां वहां यह कमीशन जाये, कुलियों का हाल दरियात करेगी और कोई ऐसा एक्ट पास कर देगी कि यहां के माल से विलायत का माल सस्ता पड़े और इस कमीशन में जो खर्च होगा वह इण्डिया गवर्नमेन्ट के माथे अवश्य ही पथेगा। सरकार हम लोगों में प्राइमरी और टेक्निकली एजूकेशन प्राथमिक तथा शिल्प शिक्षा का प्रचार करना चाहती है। गवर्नमेन्ट का यह प्रस्ताव सर्वथा सराहने लायक है किन्तु तब जबकि इसे हमारी उत्तम शिक्षा में बाधा न आये। यदि बढ़ई, लुहारे का काम सीख हमारे उच्चतम शिक्षा में हानि आयी और उच्च शिक्षा की गवर्नमेन्ट मंदादर हो गयी, इस प्राथमिक और शिल्प शिक्षा को नमस्कार है। गवर्नमेन्ट की हर एक बातों में ऐसा ही देखा गया है कि जिस रास्ते पर हम नहीं गये उस ओर हमें ले जाती है।''[3] रामविलास शर्मा जी इससे आगे बढ़कर भारत के मूल निवासी कही जाने वाली आदिवासियों के उपर किस प्रकार इस उपनिवेशित भारत में प्रताड़ित की जा रही थी उनका भी जिक्र किया वहां इनसे पहले लोगों का ध्यान बहुत कम जाता था। शर्मा जी लिखते हैं - ''आदिवासियों के साम्राज्यवादियों के हिंसक दृष्टिकोण से साहूकारों के निर्दय-शोषक दृष्टिकोण से ठीक उल्टा था।[4] यहां यह देखा जा सकता है कि रामविलास जी अंग्रेजों के दमनात्मक दृष्टि को दिखाते हैं जो आदिवासियों के प्रति हिंसक

रूप से अपनाया जाता था, जबकि अन्य भारतीय लोगों के प्रति कुछ दूसरे नरम रूख के साथ अपनाया जाता था।

इस प्रकार आज की सरकार की नीतियों को देखा जा सकता है, जिसमें जबरदस्ती आम जन को किसी विशेष नीति का पालन करने के लिए बाध्य किया जा रहा है, जैसे - विदेशी SEZ की स्थापना इत्यादि के माध्यम से छोटे-छोटे दुकानदारों, की रोजी-रोटी छीनना और आदिवासी क्षेत्रों में खनन इत्यादि का कार्य कर उनको उनके निवास स्थान से हटाना, बांधों इत्यादि का निर्माण कर जनता को विस्थापित करना, किसानों की उपजाऊ भूमि का जबरदस्ती अधिग्रहण करना ओर उसका उचित मुआवजा न देना, विदेशी कम्पनियों को सस्ते दामों पर संसाधनों को उपलब्ध कराना इत्यादि के माध्यम से। इस प्रकार सतत् विकास की अवधारणा को नष्ट करना ही है।

अंग्रेजी शिक्षा का विरोध स्वतंत्रता के पहले से ही होता चला आ रहा है। शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध होना चाहिए जिससे शिक्षा सामान्य व्यक्ति तक पहुंच सके। विदेशों में शिक्षा ऐसी दी जाती है, जिससे कि छात्र किताबी कीड़ा न बन जाय बल्कि उसकी दिमागी कूवत और तरह-तरह का कला कौशल रोज बढ़ता जाय। गुलाम भारत में अंग्रेजों की शिक्षा नीति अत्यन्त स्वार्थ परक थी, वे सिर्फ अपने शासन के लिए क्लर्क पैदा करना चाहते थे, मैकाले कहता था कि हमें ऐसे भारतीयों की जरूरत है जो शरीर और रंग रूप में तो भारतीय हों किन्तु बुद्धि में अंग्रेज। हमें ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे हमारे शासन को चलाने के लिए दुभाषिए की उपलब्धता हो सके।

लार्ड कर्जन तो निस्यन्दन का सिद्धान्त ही लगा दिया जिसके तहत शिक्षा उच्च स्तर से छन-छन कर निम्न स्तर पर पहुंचती है, इस सिद्धान्त से उच्च वर्ग को तो फायदा अवश्य मिलता था, लेकिन निम्न, गरीब भारतीय जनता को नहीं मिला था। स्वदेशी शिक्षा की वकालत करते हुए बालकृष्ण भट्ट जी उदाहरण द्वारा इसको दिखाते हैं कि विदेशों में किस प्रकार की शिक्षा दी जा रही है - ''दूसरा उदाहरण जापान का है वहां भी यही कायदा रक्खा गया है कि जो कुछ शिक्षा दी अपने पश्चिमी ढंग पर दी जाय जिससे जापान वाले किसी कौम को अपने से बढ़ा हुआ न देख सके और अपना मुल्क स्वयं अपने ही हांथ मे रक्खें।[५] शिक्षा के सन्दर्भ में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति को रामविलास शर्मा जी एक अस्त के रूप में देखते हैं, भाषा ऐसी माध्यम है जिसके द्वारा मानव अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। अंग्रेज भारतीयों के बीच भाषा के माध्यम से आपसी फूट डालते थे, इसको शर्मा जी इस नीति को उजागर करते हैं - ''साम्राज्यवादी नीति थी कि भारतीय भाषाओं में सहयोग के बदले उनके बीच ईर्ष्या और द्वेष के भाव पैदा किए जांए, विभिन्न जातियों के बीच राष्ट्रीय एकता का सम्बन्ध मजबूत करने के बदले किसी को योद्धा जाति, किसी को व्यापारी की जाति, किसी को कुछ सभ्य, किसी को कुछ अधिक सभ्य कहकर साम्राज्यवादी कूटनीति उन्हें एक दूसरे से घृणा करना सिखती थी।[६]

भारत में जिस मुक्त शिक्षा को अब अनिवार्य बनाया गया (संवैधानिक दर्जा) है, उसकी बात उस समय अर्थात गुलाम भारत में गांधी से पहले भट्ट जी करते हुए दिखायी देते हैं और प्राइमरी शिक्षा को मुत करने की आवाज उठाते हुए जापान का उदाहरण देते हैं - ''वहां बालकों

को ६ वर्ष की उम्र की शिक्षा देने लगते हैं और Primary Education के लिए कोई फीस नहीं रखी गयी (कला इत्यादि) की तालीम प्रधान अंग इनके यहां के शिक्षा का है।''[७]

जिस हस्तशिल्प शिक्षा की बात गांधी करते हैं जिसमें हथकरघा, कताई-बुनाई, इत्यादि है। जिस शिक्षा के द्वारा बालक शिक्षा प्राप्ति के समय ही कुछ कुछ जीविकोपार्जन हेतु धन कमाना शुरू कर दे और अपना खर्च चला सके। १९०५ के समय में विदेशी बहिष्कार स्वदेशी अपनाने का जो आन्दोलन चला तो इस शिक्षा का महत्व अपने आप स्वतः सिद्ध हो गया। १९०७ के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस के दो गुट बन गये (गरम दल और दूसरा नरम दल)। नये दल के रूप में गरम दल को जाना गया जिसके प्रमुख नेता बाल गंगाधर तिलक थे। बालकृष्ण भट्ट जी इस शिक्षा (शिल्प शिक्षा, जातीय शिक्षा) की बात को अपना महत्व देते हैं ओर कहते हैं ''आजकल के कांग्रेस के नये दल वाले जो बायकाट बायकाट चिल्ला रहे हैं उनका भी भीतरी यही आशय है कि हम लोग विदेशी वस्तु न लेगें और दृढ़ मत हो जायेगें तो अंत में हमको अपने बाहुबल का आसरा पकड़ना पड़ेगा और देश में कारीगरी स्वयं बढ़ेगी।''[८]

मुगलामी से पहले भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुओं की मांग विदेशों में बहुतायत थी, यहां की बनी हुयी शाल, रेशमी वस्त्र और कालीन इत्यादि के द्वारा विदेशी धन भारत में खींच लाते थे। लेकिन अंग्रेजों ने ऐसी व्यवस्था कायम की थी कि ये सब चौपट हो गयी। अंग्रेज भारत से कच्चा माल ले जाकर वहां मशीनों से तैयार कर पुनः भारत में बेचकर भारत से धन की उगाही करते थे और यहां के उत्पादन मूल्य के मुकाबले उनका उत्पादन खर्च कम होने से वह भारतीय व्यापारियों का घाटा पहुंचाते थे और तो और अंग्रेज सम्पूर्ण भारतीय व्यापार जगत् पर कब्जा कर लेने के पश्चात् यहां के सम्पूर्ण व्यापार के राजस्व को ब्रिटेन भेज देते थे। बालकृष्ण चीनी के हिसाब के द्वारा दिखाते हैं कि भारतीय धन को किस प्रकार विदेशी लूट रहे हैं - ''अस्तु और सब छोड़ हम पहले चीनी को लेते हैं - सन् १८३६ तक प्रति वर्ष २ करोड़ की चीनी यहां और-और देशों में जाया करती थी। इस समय साढ़े सात करोड़ की चीनी जो हड्डी और बैल के लहू से साफ की जाती है प्रतिवर्ष बाहर से यहां आती है तो दो करोड़ वह जो चीनी के क्रय-विक्रय से आता था और साढ़े सात यह हर साल साढ़े नौ करोड़ रूपया केवल विदेशी चीनी के द्वारा यहां का निकल जाता है।''[९] उपनिवेश की भयावह स्थिति न उबर पाने की स्थिति को भी शर्मा जी स्वतंत्रता के बाद भी महसूस करते हैं। शर्मा जी यह बात प्रेमचन्द्र के माध्यम से कहते हैं - ''भारत पर इजारेदार पूंजी का दबाव बना हुआ है, स्वाधीनता के बावजूद यह दबाव बढ़ा है। देश के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन का कोई पहलू नहीं है जो इस पूंजी की घुसपैठ से मुक्त हो, प्रेमचन्द्र ने महाजनी पूंजीवाद की जो आलोचना की है, वह आज के भारत के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है।''[१०]

अंग्रेज व्यापार की ऐसी नीति बनाये हुए थे कि सम्पूर्ण व्यापार का क्रियान्वयन वही कर सके। आज जिस वैश्वीकरण के युग में मुक्त व्यापार (Free Trade) का दौर चल रहा है, सम्पूर्ण श्वि एक गांव हो गया है। अंग्रेज भारत में यह व्यापार अपने लिए लागू किया था। एक तरफा व्यापार मुनाफा होने से भारतीय कामगार तथा उद्योग बेकार साबित हो रहे थे। इस

थतमम ज्तंकम से जो हानि आज भारत को तथा अन्य विकासशील देशों को विकसित देशों के द्वारा हो रही है, कमोवेश ऐसी ही स्थिति नहीं बल्कि इससे अधिक बदतर स्थिति ब्रिटिश उपनिवेशों की थी। बालकृष्ण भट्ट जी Free Trade से होने वाले नुकसान इस प्रकार व्यक्त करते हैं - ''स्वच्छन्द व्यापार की पालिसी इस दिवाले पर घाव में नोन का दिखना सदृश्य हो रही है। जहां से कच्चा बाना Raw Materials से जाता है या जो देश कृषि प्रधान है जमीन की पैदावार जहां की समृद्धि का हेतु है, वह देश कभी नहीं उन देशों के साथ होड़ Comfrete कर सकेगा जहां कच्चे बाने को साफ कर चीजें तैयार की जाती हैं। इसी से इस समय की विदेशी गवर्नमेन्ट ''फ्रीट्रेड'' कायम किये हैं।''[११] वहीं पर रामविलास जी बढ़ती वैज्ञानिक तकनीकी के द्वारा किस प्रकार आज पूंजीवाद अपना रूप बदलकर उपनिवेश स्थापित किए जा रहा है, शर्मा जी इस वैज्ञानिक विकास और प्रौद्योगिकी के विकास में अन्तर स्पष्ट करते हैं - ''वैज्ञानिक चिन्तन का प्रसार आज के पूंजीपतियों का लक्ष्य नहीं है। वे प्रौद्योगिकी का प्रसार करते हैं और कहते हैं कि यही तुम्हारी माता है और यहीं पिता है, इसी की पूजा करो, इसको तो मैं पूंजीवाद का पतन मानता हूं।[१२] रामविलास जी यह दिखाते हैं कि वर्तमान समय में उपनिवेश वाद अपना रूप बदल लिया है। स्वतंत्र भारत में उपनिवेशवाद से संघर्ष का मुद्दा गौण हो गया। वर्तमान व्यवस्था साम्राज्यवाद की सहयोगी है, सहायक है, शर्मा जी देश के विकास के लिए इस व्यवस्था को बदलने के लिए आगे दिखते हैं - ''वर्तमान व्यवस्था को पूर्णतः बदले बिना यह देश प्रगति नहीं कर सकता और उसके लिए पहला कदम जो उठाना चाहिए, वह है साम्राज्यवाद से आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद।''[१३] इस प्रकार बालकृष्ण भट्ट औपनिवेशिक भारत के विषय में लिखा तो वहीं पर शर्मा जी ने गुलाम और स्वतंत्र भारत दोनों के सम्बन्ध में उपनिवेशवाद के स्वरूप को बताते हुए इससे निजात पाने का तरीका भी बताते गये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

१. मिश्र, सत्य प्रकाश, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट प्रतिनिधि संकलन, प्रजा पीड़ा, पृष्ठ सं० १६४
२. शर्मा, रामविलास, सन सत्तावन की राज्य क्रान्ति और मार्क्सवाद, पृष्ठ ४३, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद।
३. मिश्र, सत्य प्रकाश, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट के श्रेष्ठ निबन्ध, राजा और प्रजा, प्रथम संस्करण १९९८, पृष्ठ सं० १५१ लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद।
४. शर्मा, रामविलास, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पृष्ठ सं० १७५, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद।
५. मिश्र, सत्य प्रकाश, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट प्रतिनिधि संकलन, अंगेजी तालीम और जातीय शिक्षा, पृष्ठ ५५
६. शर्मा, रामविलास, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पृष्ठ सं० ३४१, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद।
७. मिश्र, सत्य प्रकाश, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट प्रतिनिधि संकलन, अंगेजी तालीम और जातीय शिक्षा, पृष्ठ १५५

८. वही पृष्ठ सं० ५६
९. मिश्र, सत्य प्रकाश, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट प्रतिनिधि संकलन, भारत का दिवाला, पृष्ठ सं० ५१
१०. शर्मा, रामविलास, प्रेम चन्द्र और उनका युग, चौथे संस्करण की भूमिका
११. मिश्र, सत्य प्रकाश, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट प्रतिनिधि संकलन, भारत का दिवाला, पृष्ठ सं० १५२
१२. तिवारी अजय, आज के सवाल और मार्क्सवाद, पृष्ठ संख्या १४७
१३. वही पृष्ठ सं० २३५

******